स्त्री लाभः जातकाभरणम्

रीता रानी पटियाल

प्रस्तुत संकलन में स्त्री लाभ के योग दिए गए हैं:-

- जिस पुरूष के जन्म लग्न और सप्तम भाव में शुभग्रह का नवमांश, द्वादशांश तथा द्रेष्कोण का उदय हो उस मनुष्य को शीघ्र ही स्त्री का लाभ होता है।
- जन्म लग्न से सप्तम भाव में शुभ राशि हो, वह शुभ ग्रह से युत और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो निश्चय ही शीघ्र स्त्री प्राप्ति और यदि मिश्रित प्रभाव (पाप और शुभ ग्रह) से दृग्युत हो तो अनेक विघ्न के बाद स्त्री की प्राप्ति होती है।
- जिसके लग्न से बारहवें या छठे स्थान में सूर्य-चन्द्रमा की युति हो तो उस जातक के एक ही स्त्री एवं एक ही पुत्र होता है।
- जिस मनुष्य के जन्मकाल में शुक्र, चन्द्र, बृहस्पति और बुध यह चारों या तीन या दो या एक ग्रह सातवें भाव में बैठे हों या इन ग्रहों की विषम स्थान पर दृष्टि हो तो इन्हीं ग्रहों के सदृश स्वभाव वाली उतनी स्त्री कहनी चाहिए।
- जिसके सातवें भाव में जो संख्या नवांश का उदय हो, जितने ग्रह देखते हों उस जातक के उतने विवाह कहे हैं।
- मंगल सूर्य का नवांश सातवें भाव में हो अथवा सप्तम भाव में सूर्य-बुध हो तो एक ही विवाह कहना चाहिए।
- जिसके सप्तम भाव में शुक्र ग्रह का वर्ग हो और शुक्र देखता हो वह अनेक स्त्रियों वाला होता है।

- लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तम भाव में भाव स्वामी यदि शुभ ग्रह युक्त अथवा इष्ट दृष्ट हो तो स्त्री प्राप्ति अवश्य कहनी चाहिए।
- जिसके जन्मकाल में धनु और मीन राशि में सूर्य बैठा हो और उसे शुक्र देखता हो तो मनुष्य को सुगंधवाली स्त्री प्राप्त होती है।
- जिसके सप्तम भाव में पाप ग्रह हों, मिश्रित ग्रहों से दृष्ट हो तो स्त्री प्राप्ति का समय होने पर भी स्त्री प्राप्त नहीं होती।
- जिस मनुष्य की जन्मकुंडली के सप्तम भाव में शुक्र बुध बैठें हों उसका विवाह नहीं होता और पूर्वोक्त योग (सप्तम में शुभ ग्रह व पाप दृष्ट होने पर स्त्री प्राप्त होती है) हो तो अत्यंत वृद्ध अवस्था में स्त्री लाभ मिलता है।
- शुक्र ग्रह का वर्ग सप्तम भाव में हो और शुक्र देखता हो तो बहुत स्त्रियाँ प्राप्त होती हैं अगर पाप ग्रह देखते हों तो विवाह नहीं होता।
- सप्तम भाव में मंगल हो तो स्त्री हीन, शनि हो तो स्त्री की मृत्यु कही है।
- सप्तम भाव में राहु बैठा हो और दो पाप ग्रह देखते हों तो स्त्री प्राप्त नहीं होती और यदि प्राप्त हो तो ज्यादा दिनांक तक नहीं जीती।
- जिस मनुष्य के छठे भाव में मंगल, सप्तम में राहु, अष्टम में शनि हो तो स्त्री नहीं जीती।
- लग्न में सूर्य, सप्तम में शनि होने पर स्त्री का नाश कहना चाहिए।

*****